

“मध्यकालीन भारत में महिला श्रम का इतिहास कृषि हस्तशिल्प एवं घरेलू उद्योगों का अध्ययन

श्री.नितिन वर्मा, डॉ.नाजिया हुसैन

पी.एच.डी. शोधार्थी इतिहास विभाग श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय विद्यानगरी झुंझुनू राजस्थान ।

शोध निर्देशिका इतिहास विभाग श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय विद्यानगरी झुंझुनू राजस्थान ।”

सारांश

महिलाओं के श्रम और आर्थिक योगदान को मध्यकालीन भारत के इतिहास का अध्ययन प्रायः राजनीतिक घटनाओं और प्रशासनिक व्यवस्थाओं के संदर्भ में किया गया है जिसके परिणामस्वरूप महिलाओं के श्रम और आर्थिक योगदान को उचित महत्व नहीं मिल सका। इस शोध-पत्र का उद्देश्य मध्यकालीन भारत में महिलाओं के श्रम की प्रकृति का ऐतिहासिक विश्लेषण करना है साथ ही कृषि हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों में उनकी भूमिका का भी अध्ययन में ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक प्रक्रिया का उपयोग किया गया है साथ ही उपलब्ध प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का भी उपयोग किया गया है।

अध्ययन से पता चलता है कि कृषि पशुपालन सूत कटाई वस्त्र निर्माण खाद्य प्रसंस्करण तथा हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में महिलाएँ बहुत सक्रिय रूप से काम करती थीं। उनके काम ने पारिवारिक आय स्थानीय बाजार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किया। यद्यपि उनका अधिकांश काम स्वचालित या अप्रत्यक्ष था फिर भी वह उत्पादन प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। पुरुष-केंद्रित इतिहासलेखन के कारण उनके वित्तीय योगदान का पर्याप्त मूल्यांकन नहीं किया गया था। यह अध्ययन बताता है कि महिला श्रम के विश्लेषण के बिना मध्यकालीन भारत के आर्थिक इतिहास को पूरी तरह से समझना असम्भव है।

मुख्य शब्द

मध्यकालीन भारत महिला श्रम कृषि हस्तशिल्प कुटीर उद्योग घरेलू उद्योग आर्थिक इतिहास और सामाजिक इतिहास

परिचय

राजनीतिक घटनाओं राजवंशों और युद्धों ने भारतीय इतिहास के अध्ययन में लंबे समय से महत्वपूर्ण स्थान दिया है। नतीजतन उत्पादन श्रम तथा आर्थिक विकास में प्रत्यक्ष योगदान देने वाले समाज के उन वर्गों की भूमिका अपेक्षाकृत कम महसूस की गई। इस उपेक्षित क्षेत्र में महिलाओं का श्रम भी महत्वपूर्ण है। विशेषकर मध्यकालीन भारत में महिलाओं को प्रायः केवल पारिवारिक जीवन धार्मिक गतिविधियों और सामाजिक परम्पराओं के रूप में देखा गया है जबकि उनकी आर्थिक जीवन में सक्रिय भागीदारी पर बहुत कम ध्यान दिया गया है।

मध्यकालीन भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर करती थी। आर्थिक संरचना कृषि उत्पादन पशुपालन बागवानी सूत कटाई वस्त्र निर्माण हस्तशिल्प और घरेलू उद्योग पर निर्भर थी। महिलाओं का कार्य इन सभी क्षेत्रों में बहुत महत्वपूर्ण था। वे खेतों में पुरुषों के साथ काम करती थीं जैसे बीज चयन रोपाई निराई –गुड़ाई कटाई तथा फसल भंडारण। इसके अलावा महिलाओं ने घरेलू खाद्य प्रसंस्करण दुग्ध उत्पादन और पशुपालन

की अधिकांश नौकरियां भी निभाईं। इस प्रकार महिलाओं का श्रम उत्पादन प्रक्रिया का निरंतर और आवश्यक हिस्सा था।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था परिवार आधारित थी जहाँ उत्पादन और उपभोग दोनों परिवार के भीतर होते थे। इस व्यवस्था में महिलाओं का श्रम प्रत्यक्ष आय के रूप में नहीं दिखाई देता था लेकिन उसका आर्थिक मूल्य बहुत बड़ा था। परिवार की आर्थिक स्थिरता सूत कताई वस्त्र बनाने टोकरी बनाने मिट्टी के बर्तनों की तैयारी खाद्य पदार्थों का संरक्षण और अन्य घरेलू कार्यों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से निर्धारित हुई। इन उत्पादों को स्थानीय विनिमय प्रणाली और ग्रामीण बाजारों में भी महत्वपूर्ण स्थान था।

इतिहासलेखन के पारंपरिक तरीकों ने सामान्य महिलाओं के काम की अपेक्षा शासक वर्ग की महिलाओं या विशेष ऐतिहासिक व्यक्तित्वों पर अधिक ध्यान दिया। नारीवादी इतिहासकारों और आधुनिक सामाजिक और आर्थिक इतिहासकारों ने महिला श्रम को इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र बनाया है। उनका दावा था कि किसी भी समाज की उत्पादन संरचना को पूरी तरह से समझा नहीं जा सकता अगर घरेलू श्रम और अवैतनिक महिलाओं को आर्थिक गतिविधि के रूप में स्वीकार नहीं किया जाता।

इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध—पत्र मध्यकालीन भारत में महिला श्रम के कई रूपों का विश्लेषण करता है। इसमें विशेष रूप से घरेलू उद्योगों हस्तशिल्प और कृषि में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि महिला श्रम के ऐतिहासिक अध्ययन से भारतीय आर्थिक इतिहास की व्याख्या किस प्रकार अधिक व्यापक संतुलित होती है।

महिला श्रम पर लेखों की समीक्षा

मध्यकालीन भारत में महिला श्रम पर लेखों की संख्या अपेक्षाकृत सीमित है। महिलाओं के आर्थिक योगदान पर बहुत कम चर्चा हुई क्योंकि प्रारंभिक इतिहासकारों ने अधिकतर राजनीतिक घटनाओं और शासकों के जीवन पर ध्यान दिया। राष्ट्रवादी इतिहासलेखन में महिलाओं की भूमिका का उल्लेख मुख्यतः वीरांगनाओं संत महिलाओं और राजपरिवारों तक सीमित रहा।

वर्तमान सामाजिक और आर्थिक इतिहासकारों ने इस स्थिति को काफी बदल दिया है। वे ग्रामीण समाज उत्पादन प्रणाली कृषि संरचना और श्रम विभाजन का अध्ययन करके महिलाओं की भूमिका को समझने की कोशिश करते थे। इरफान हबीब ने मध्यकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था का विश्लेषण करते हुए श्रम की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। उनका अध्ययन महिला श्रम पर नहीं केंद्रित है लेकिन उनके निष्कर्ष महिलाओं की आर्थिक भूमिका को समझने में मदद करते हैं।

महिला अध्ययन के क्षेत्र में कुमकुम रॉय उमा चक्रवर्ती और अन्य विद्वानों ने यह दावा किया कि महिलाओं के घरेलू और उत्पादक काम को अलग-अलग श्रेणियों में विभाजित करके नहीं देखा जा सकता है। पारिवारिक अर्थव्यवस्था घरेलू उत्पादन खाद्य प्रसंस्करण वस्त्र निर्माण और कुटीर उद्योगों में महिलाओं का काम था। इसी तरह नारीवादी इतिहासलेखन ने दावा किया कि आर्थिक इतिहास में महिलाओं के अवैतनिक कार्य का मूल्यांकन किया जाएगा।

हस्तशिल्प घरेलू उद्योगों और कृषि में महिलाओं की भूमिका पर अभी भी समेकित और विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता है जैसा कि उपलब्ध साहित्य का अध्ययन बताता है। यह शोध—पत्र महिला श्रम के इतिहास को सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से पुनर्मूल्यांकन करने की कोशिश करता है।

मध्यकालीन भारत में कृषि एवं महिला श्रम

कृषि मध्यकालीन भारत की अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा थी। ज्यादातर लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते थे क्योंकि भूमि उत्पादन का प्रमुख साधन था। इस कृषि व्यवस्था की सफलता केवल पुरुष श्रम पर निर्भर नहीं थी महिलाओं का भी योगदान समान महत्वपूर्ण था। समकालीन ऐतिहासिक स्रोतों में महिलाओं के श्रम का बहुत कम उल्लेख है लेकिन उपलब्ध साहित्य यात्रावृत्तों और सामाजिक-आर्थिक अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि महिलाएं कृषि उत्पादन की हर प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल थीं।

कृषि क्षेत्र में महिलाएं केवल सहायक श्रमिक नहीं थीं। वे नियमित रूप से खेतों की तैयारी बीजों का चयन पौधों की रोपाईं निराई-गुड़ाई सिंचाई में सहयोग फसल कटाई अनाज सुखाने भंडारण और बीज संरक्षण जैसे कई कार्यों में शामिल होती थीं। विशेष रूप से वर्षा आधारित कृषि क्षेत्रों में महिलाओं का श्रम उत्पादन निरंतर बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण था। कृषि व्यवस्था की निरंतरता प्रभावित हो सकती थी अगर इन कार्यों को उत्पादन प्रक्रिया से अलग कर दिया जाए।

पारिवारिक आवश्यकताओं और कृषि चक्र ने ग्रामीण परिवारों में श्रम का विभाजन निर्धारित किया। पुरुष अक्सर हल चलाने भूमि की जुताई तथा बाह्य व्यापारिक गतिविधियों में अधिक संलग्न रहते थे जबकि महिलाएँ निरंतर श्रम सावधानी तथा समय की आवश्यकता वाले कृषि कार्यों को निभाती थीं। इस प्रकार कृषि उत्पादन एक सामूहिक पारिवारिक कार्य था जिसमें महिलाओं का योगदान अनिवार्य था।

महिलाएँ कृषि कार्यों के अलावा पशुपालन से भी प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई थीं। महिलाओं ने दुग्ध उत्पादन पशुओं के चारे की व्यवस्था गोबर से खाद और ईंधन बनाना पशुओं की देखभाल करना और दुग्ध उत्पादों का संरक्षण जैसे कामों को किया था। पशुपालन एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा था क्योंकि यह परिवारों को कृषि के लिए आवश्यक संसाधन और अतिरिक्त आय प्रदान करता था। नतीजतन महिलाओं का योगदान कृषि उत्पादन से बाहर था और कृषि-आधारित पूरी आर्थिक व्यवस्था से जुड़ा हुआ था।

मध्यकालीन भारत में कृषि की प्रणाली अलग-अलग थी। उत्तरी भारत में गेहूँ और जौ पूर्वी भारत में धान दक्षिणी भारत में धान और बाजरा और पश्चिमी भारत में कपास की खेती होती थी। इन सभी क्षेत्रों में महिलाओं की कृषि में भागीदारी स्थानीय आवश्यकताओं से बदलती थी। इससे स्पष्ट होता है कि क्षेत्रीय आर्थिक संरचनाएं महिला श्रम को प्रभावित नहीं करती थीं।

महिला श्रम एवं कृषि उत्पादन की आर्थिक उपयोगिता

महिलाओं के कृषि श्रम का आर्थिक मूल्य मध्यकालीन भारत में स्पष्ट रूप से दर्ज नहीं हुआ और इतिहासलेखन में उनके योगदान की उपेक्षा हुई। लेकिन उनका श्रम पैसे के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। यह काम उत्पादन लागत को कम करता था और परिवार की आर्थिक स्थिरता बनाए रखता था जैसे कि बीज संरक्षण खाद्य सामग्री का भंडारण कृषि उपज का प्रसंस्करण और अगली फसल के लिए बीज सुरक्षित रखना। संसाधनों की बचत हुई क्योंकि इन कार्यों के लिए बाहरी कर्मचारियों की आवश्यकता नहीं थी। साथ ही ग्रामीण खाद्य सुरक्षा का मुख्य आधार महिलाओं का श्रम था।

महिला श्रम का सामाजिक आयाम

महिलाओं की कृषि में सक्रिय भागीदारी के बावजूद मध्यकालीन भारत में भूमि उत्पादन और स्वामित्व का औपचारिक श्रेय पुरुषों पर था इसलिए पुरुषों को ही सामाजिक और आर्थिक मान्यता मिलती थी। परिणामस्वरूप महिलाओं का श्रम पारिवारिक कर्तव्य माना गया और उनकी स्वतंत्र आर्थिक पहचान नहीं बन सकी। यह स्थिति अदृश्य श्रम की अवधारणा को स्पष्ट करती है। वर्तमान आर्थिक इतिहासकारों और नारीवादी इतिहासकारों ने साबित किया है कि महिलाओं का श्रम परिवार-आधारित ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सफल होना था। इसलिए महिला श्रम को कृषि उत्पादन में एक महत्वपूर्ण उत्पादक शक्ति मानना चाहिए।

अंतरिम निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से पता चलता है कि मध्यकालीन भारत में महिलाओं के श्रम का सबसे बड़ा स्थान कृषि क्षेत्र था। उन्होंने कृषि उत्पादन पशुपालन खाद्य संरक्षण और संसाधन प्रबंधन के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बचाया। उन्हें औपचारिक रूप से भुगतान नहीं किया गया था लेकिन उनका योगदान उत्पादन प्रणाली के लिए अनिवार्य था। इसलिए मध्यकालीन भारत के कृषि इतिहास का सही अध्ययन बिना महिला श्रम के विश्लेषण के असफल होगा।

मध्यकालीन भारत में हस्तशिल्प एवं कुटीर उद्योगों में महिलाओं की भूमिका

मध्यकालीन भारत की अर्थव्यवस्था कृषि कुटीर उद्योग हस्तशिल्प और घरेलू उत्पादन पर भी आधारित थी जिसमें महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान था। महिलाएँ नगरीय और ग्रामीण दोनों जगहों में कच्चे माल की तैयारी निर्माण परिष्करण संरक्षण तथा भंडारण जैसे कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। कुटीर उद्योगों का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास स्पष्ट करता है कि कई परिवार-आधारित थे और उनकी उत्पादन प्रक्रिया महिलाओं के श्रम पर निर्भर थी हालांकि वर्तमान अभिलेखों में उनके काम का बहुत सारा उल्लेख नहीं मिलता। महिलाएँ घरेलू जिम्मेदारियों और आर्थिक उत्पादन के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी थीं।

वस्त्र निर्माण एवं सूत कटाई में महिलाओं का योगदान

मध्यकालीन भारत का वस्त्र उद्योग विश्वभर में प्रसिद्ध था और इसकी प्रारम्भिक उत्पादन प्रक्रिया मुख्यतः महिलाओं के श्रम पर आधारित थी। महिलाएँ कपास की सफाई रूई तैयार करना सूत कातना धागे का संरक्षण तथा बुनाई के लिए आवश्यक सामग्री तैयार करने जैसे कार्य करती थीं। ग्रामीण क्षेत्रों में अतिरिक्त सूत एवं वस्त्र स्थानीय बाजारों में बेचकर वे परिवार की आय में भी योगदान देती थीं। गुजरात बंगाल और दक्कन जैसे क्षेत्रों में वस्त्र उद्योग के विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। यद्यपि समकालीन स्रोतों में इसका सीमित उल्लेख मिलता है फिर भी आर्थिक इतिहास उनके योगदान की पुष्टि करता है।

हस्तशिल्प उद्योगों में महिलाओं की सहभागिता

मध्यकालीन भारत में महिलाएँ वस्त्र बनाने के अलावा टोकरी रस्सी चटाई मिट्टी के बर्तन खाद्य संरक्षण तथा घरेलू उपयोग की वस्तुओं के निर्माण जैसे कई हस्तशिल्प उद्योगों में भी काम करती थीं। ये कंपनियां प्रायः घरेलू स्तर पर काम करती थीं और अधिक निवेश की आवश्यकता नहीं थी। महिलाएँ घरेलू काम करने के अलावा आर्थिक उत्पादन भी करती थीं। स्थानीय मेलों साप्ताहिक बाजारों और ग्रामीण विनिमय तंत्र ने उनके उत्पादों को दूसरे परिवारों तक पहुंचाया। इसलिए महिलाओं का श्रम स्थानीय अर्थव्यवस्था और ग्रामीण व्यापार का एक महत्वपूर्ण भाग था।

खाद्य प्रसंस्करण एवं घरेलू उद्योग

खाद्य प्रसंस्करण मध्यकालीन भारत में घरेलू उद्योगों का एक बड़ा हिस्सा था जिसमें महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान था। वे अनाज को साफ करते पीसते मसालों को तैयार करते दालों और खाद्य पदार्थों को बचाते घी बनाते और दुग्ध उत्पाद बनाते थे। इन क्रियाओं से परिवार को खाद्य सामग्री मिलती थी कृषि उत्पादन का अपव्यय कम होता था और अतिरिक्त खाद्य सामग्री की विनिमय या बिक्री से आय मिलती थी। साथ ही महिलाओं ने संसाधनों का कुशल उपयोग और संरक्षण करके घरेलू उत्पादन की आर्थिक दक्षता बढ़ा दी जो प्रभावी संसाधन प्रबंधन का एक अच्छा उदाहरण था।

अंतरिम निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से पता चलता है कि मध्यकालीन भारत में महिलाओं की भूमिका बहुआयामी व्यापक और व्यापक थी। उन्हें वस्त्र बनाने सूत कटाई खाद्य प्रसंस्करण घरेलू उत्पादन और लघु उद्योगों ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ाया। लंबे समय तक भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा उनके योगदान का इतिहासलेखन में उचित मूल्यांकन नहीं मिला। इसलिए मध्यकालीन भारत की आर्थिक संरचना को समझने के लिए महिला श्रम का पुनर्मूल्यांकन करना आवश्यक है।

घरेलू उद्योग एवं अदृश्य महिला श्रम एक सामाजिक एवं आर्थिक विश्लेषण

महिलाओं का घरेलू श्रम मध्यकालीन भारत की आर्थिक व्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण था लेकिन इतिहासलेखन में इसे पर्याप्त सम्मान नहीं मिला। ज्यादातर परिवार आत्मनिर्भर आर्थिक इकाइयाँ थीं जहाँ महिलाएँ खाद्य प्रसंस्करण वस्त्र बनाने ईंधन संग्रह करने पशुपालन दुग्ध उत्पादों का उत्पादन अनाज संरक्षण तथा घरेलू उपकरणों का रख-रखाव करती थीं। उन्हें इन कामों के लिए प्रत्यक्ष पारिश्रमिक नहीं मिलता था लेकिन वे परिवार की उत्पादन लागत कम करने और आर्थिक स्थिरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान देते थे। वे घरेलू उत्पादन संसाधनों का बचाव और पुनः उपयोग करके पैसे बचाते थे। आधुनिक नारीवादी अर्थशास्त्र इसे अदृश्य श्रम मानता है जो अर्थव्यवस्था और परिवार दोनों के लिए अनिवार्य था।

महिला श्रम का सामाजिक एवं आर्थिक विश्लेषण

मध्यकालीन भारत में सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक संरचनाओं ने महिला श्रम पर व्यापक प्रभाव डाला। पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने पुरुषों को सार्वजनिक आर्थिक गतिविधियों में शामिल किया जबकि महिलाओं को घरेलू और सहायक उत्पादन कार्यों में शामिल किया गया था। महिलाओं ने कृषि हस्तशिल्प और घरेलू उद्योगों में महत्वपूर्ण योगदान दिया लेकिन उनका नियंत्रण भूमि पूँजी और व्यापारिक संसाधनों पर सीमित था। ऐतिहासिक स्रोतों में उनके काम का पर्याप्त उल्लेख नहीं है क्योंकि यह पारिवारिक कर्तव्य था। आधुनिक सामाजिक इतिहास और नारीवादी अध्ययन ने दिखाया है कि कृषि खाद्य सुरक्षा हस्तशिल्प और संसाधन संरक्षण में महिलाओं की भूमिका ने भारतीय अर्थव्यवस्था को बचाया। इसलिए महिला श्रम को उत्पादक आर्थिक शक्ति के रूप में मानना चाहिए।

निष्कर्ष

यह अध्ययन बताता है कि मध्यकालीन भारत में महिलाओं का श्रम सामाजिक और आर्थिक जीवन का आधार था। कृषि पशुपालन वस्त्र निर्माण हस्तशिल्प कुटीर उद्योग तथा घरेलू उत्पादन में उनकी सक्रिय भागीदारी ने पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बनाया। इसके बावजूद महिलाओं का श्रम अक्सर पारिवारिक जिम्मेदारी मानकर उसका स्वतंत्र आर्थिक मूल्यांकन नहीं किया गया जिससे उनका योगदान इतिहास में उपेक्षित रहा। महिला श्रम के विश्लेषण के बिना मध्यकालीन भारत के आर्थिक इतिहास को पूरी तरह से समझना असम्भव है। अतः महिलाओं के श्रम का पुनर्मूल्यांकन आर्थिक सामाजिक एवं लैंगिक इतिहास को अधिक व्यापक और संतुलित दृष्टि देता है।

संदर्भ

“**Habib, Irfan.** (2001). *Medieval India: The Study of a Civilization*. New Delhi: National Book Trust.

Chandra, Satish. (2007). *History of Medieval India*. Hyderabad: Orient BlackSwan.

Sharma, R. S. (1965). *Indian Feudalism*. Calcutta: University of Calcutta.

Raychaudhuri, Tapan & Habib, Irfan (Eds.). (1982). *The Cambridge Economic History of India, Vol. I (c.1200–1750)*. Cambridge: Cambridge University Press.

Roy, Kumkum. (1999). *Women in Early Indian Societies*. New Delhi: Manohar Publishers.

Habib, I. (1963). *The Agrarian System of Mughal India (1556–1707)*. Asia Publishing House.

Habib, I. (1999). *The Agrarian System of Mughal India (1556–1707)* (2nd ed.). Oxford University Press.

Lal, Ruby. (2005). *Domesticity and Power in the Early Mughal World*. Cambridge: Cambridge University Press.

Ramaswamy, Vijaya. (2010). “**Perspectives on Women and Work in Pre-Colonial South India.**” *International Journal of Asian Studies*, 7(1), 35–58. DOI: **10.1017/S1479591409990180**. यह लेख पूर्व-औपनिवेशिक भारत में महिलाओं के श्रम और उत्पादन में उनकी भूमिका का ऐतिहासिक विश्लेषण करता है।

Verma, Anjali. (2010). “**Women Administrators in Epigraphic Sources.**” *Indian Historical Review*, 37(1). DOI: **10.1177/037698361003700101** ;ह लेख प्रारम्भिक मध्यकालीन भारत में महिलाओं की प्रशासनिक एवं सामाजिक-आर्थिक भूमिका पर अभिलेखीय साक्ष्यों का अध्ययन करता है।

Joshi, Chitra. (2008). “**Histories of Indian Labour: Predicaments and Possibilities.**” *History Compass*, 6(2). DOI: **10.1111/j.1478-0542.2007.00503.x** यह लेख भारतीय श्रम-इतिहास के अध्ययन में लैंगिक (हमदकमत) दृष्टिकोण के महत्व पर चर्चा करता है।”